***दैनिक जीवन के लिए नीतिवचन* (*भाग*-3)**

परिवार पर नीतिवचन
रविवार 18 जनवरी, 2026 – संदेश की रूपरेखा

घर के लिए

नीतिवचन 3:33
दुष्ट के घर पर यहोवा का शाप, परन्तु धर्मियों के वासस्थान पर उसकी आशीष होती है।

नीतिवचन 14:11
दुष्टों का घर विनाश होता है, परन्तु सीधे लोगों का तम्बू फलता-फूलता है।

नीतिवचन 15:6
धर्मी के घर में बहुत धन रहता है, परन्तु दुष्ट के उपार्जन में घबराहट होती है।

नीतिवचन 17:1
मेल के साथ सूखा टुकड़ा, उस घर से उत्तम है जिसमें मेलबलि के पशु भरे हों, परन्तु झगड़ा रगड़ा हो।

नीतिवचन 17:13
जो कोई भलाई के बदले बुराई करे, उसके घर से बुराई न मिटेगी।

नीतिवचन 24:3-4
3 घर बुद्धि से बनता है, और समझ के द्वारा स्थिर होता है;
4 और ज्ञान के द्वारा कोठरियां सब प्रकार की बहुमूल्य और मनभावनी वस्तुओं से भर जाती हैं।

नीतिवचन 24:27
अपना बाहर का काम काज ठीक करना, और खेत में उसे तैयार कर लेना; उसके बाद अपना घर बनाना।

पति के लिए

नीतिवचन 5:18-19
18 तेरा सोता धन्य रहे, और अपनी जवानी की पत्नी के साथ आनन्दित रह।
19 वह प्रिय हरिणी या सुन्दर बारहसिंघी के समान रहे; उसकी छातियों से तू सर्वदा तृप्त रहे, और उसके प्रेम में तू नित्य मगन रहे।

नीतिवचन 18:22
जिसने स्त्री ब्याह ली, उस ने उत्तम पदार्थ पाया, और यहोवा का अनुग्रह उस पर हुआ है।

नीतिवचन 19:14
घर और धन पुरखाओं के भाग में, परन्तु बुद्धिमती पत्नी यहोवा ही से मिलती है।

नीतिवचन 31:10-11, 28
10 भली पत्नी कौन पा सकता है? क्योंकि उसका मूल्य मूंगों से भी बहुत अधिक है।
11 उसके पति के मन को उस पर भरोसा है, और उसे लाभ की घटी नहीं होती।
28 उसके पुत्र उठकर उसको धन्य कहते हैं, और उसका पति भी उठकर उसकी ऐसी प्रशंसा करता है:

पत्नी के लिए

नीतिवचन 12:4
भली स्त्री अपने पति का मुकुट है, परन्तु जो लज्जा का कारण होती है, वह उसकी हड्डियों में सड़ाहाट है।

नीतिवचन 21:9
झगड़ालू पत्नी के संग सांझा घर में रहने से छत के कोने पर रहना उत्तम है।

नीतिवचन 14:1
हर एक बुद्धिमान स्त्री अपने घर को बनाती है, पर मूढ़ स्त्री उसको अपने ही हाथों से ढा देती है।

नीतिवचन 31:30
शोभा तो झूठी और सुन्दरता व्यर्थ है, परन्तु वह स्त्री जो यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी।

माता-पिता के विषय में

नीतिवचन 13:24
जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता वह उसका बैरी है, पर जो उस से प्रेम रखता है वह यत्न से उसको शिक्षा देता है।

नीतिवचन 19:18
जब तक आशा है तब तक अपने पुत्र को ताड़ना दे, जान बूझकर उसको मार न डाल।

बच्चों के लिए

नीतिवचन 1:8-9
8 हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर कान लगा, और अपनी माता की शिक्षा को न तज;
9 क्योंकि वे तेरे सिर के लिये शोभायमान मुकुट, और तेरे गले के लिये हार होंगी।

नीतिवचन 6:20-23
20 हे मेरे पुत्र, अपने पिता की आज्ञा को मान ले, और अपनी माता की शिक्षा को न छोड़।
21 इन को अपने हृदय में सदा गांठे रह, और अपने गले का हार बना ले।
22 जब तू चलेगा तब वे तेरी अगुवाई करेंगी, जब तू सोएगा तब वे तेरी रक्षा करेंगी, और जब तू जागेगा तब वे तुझ से बातें करेंगी।
23 आज्ञा तो दीपक है और शिक्षा ज्योति, और सिखाने वाली डांट जीवन का मार्ग है।

नीतिवचन 10:1
बुद्धिमान पुत्र से पिता आनन्दित होता है, परन्तु मूर्ख पुत्र से माता उदास होती है।

नीतिवचन 10:5
जो बेटा धूपकाल में बटोरता है वह बुद्धिमान है, परन्तु जो बेटा कटनी के समय भारी नींद में पड़ा रहता है, वह लज्जा का कारण होता है।

नीतिवचन 19:26
जो अपने पिता को उजाड़ता और अपनी माता को निकाल देता है, वह लज्जा और अपमान का कारण होनेवाला पुत्र है।

नीतिवचन 28:7
व्यवस्था का माननेवाला समझदार पूत है, परन्तु उड़ाऊओं का संगी अपने पिता का अपमान करता है।

भाई-बहनों के लिए

नीतिवचन 17:17
मित्र सब समयों में प्रेम रखता है, और विपत्ति के दिन के लिये भाई बन जाता है।

नीतिवचन 18:19
जिस भाई का अपराध किया गया हो, वह गढ़वाले नगर से भी दृढ़ है, और झगड़े रगड़े राजभवन के बेड़ों के समान हैं।

विधवाओं के लिए

नीतिवचन 15:25
यहोवा अहंकारियों के घर को ढा देता है, परन्तु विधवा के सिवाने को वह बनाए रखता है।